बृजेन्द्र श्रीवास्तव 'उत्कर्ष'
कवि एवं लेखक
एम॰ए॰; बी॰एड॰; आई॰जी॰डी॰; पीजीडीजेएमसी

206, टाइप-2, आई॰ आई॰ टी॰, कानपुर, भारत
मो॰ 91-9956171230, फो॰ 0512-2598638
E-Mail: kaviutkarsh@gmail.com
Blog: www.kaviutkarsh.blogspot.com

भगवान

बहुत परेशान, बहुत हैरान,
ढूढने निकला, भगवान,
मंदिर,मस्जिद, गिरजा,गुरुद्वारा,
सरोवर, नदी, पहाड़, वन,
हर जगह ढूंढा,
कही न मिला भगवान,
थक हार घर लौटा, देखा!
माँ, ममतामई अश्रु लिए,
देहरी पर चिंता-निमग्न,
पिता,
ह्रदय-सिन्धु के सूनामी थपेड़ों को,
माथे पर समेटे,
सूने नैनों से, राह निहार रहे है,
हाय! मै मूरख, कहाँ-कहाँ घूमा,
कहाँ कहाँ ढूंढा, पर
स्नेह-आशीष की गोद में उठाने को,
घर में ही मिले भगवान ||

✷बृजेन्द्र श्रीवास्तव "उत्कर्ष"